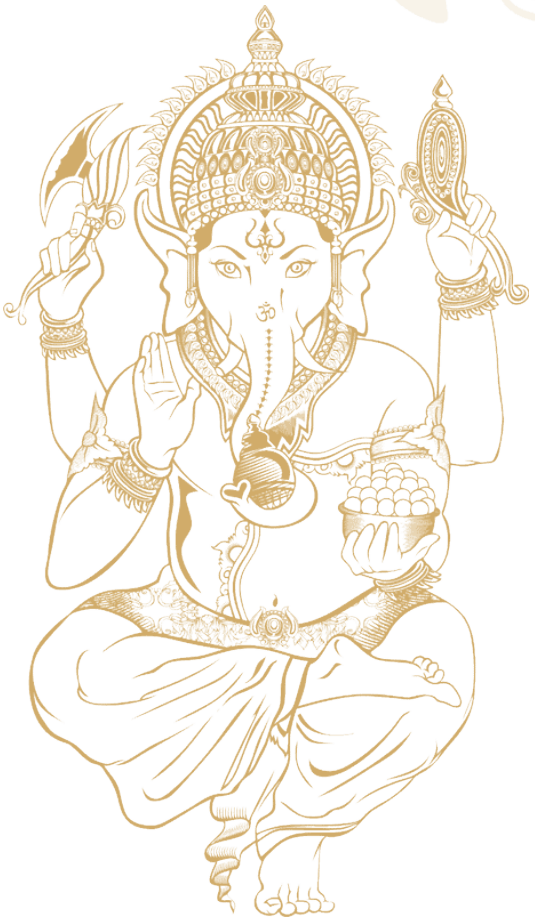

indrajeet

sakshi

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121302701

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121302701 Date: 17/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
21/09/1997	जन्म तिथि	23/03/2001
रविवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 12:30:00	जन्म समय	09:00:00 घंटे
घटी 15:52:40	जन्म समय(घटी)	06:34:21 घटी
India	देश	India
Bangalore	स्थान	Bangalore
13:00:00 उत्तर	अक्षांश	13:00:00 उत्तर
77:35:00 पूर्व	रेखांश	77:35:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:40	स्थानिक संस्कार	-00:19:40 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:08:55	सूर्योदय	06:22:15
18:16:24	सूर्यास्त	18:30:30
23:49:27	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:10

धनु	लग्न	मेष
गुरु	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
वृष	राशि	कुम्भ
शुक्र	राशि-स्वामी	शनि
कृतिका	नक्षत्र	शतभिषा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	राहु
3	चरण	4
वज्र	योग	शुभ
गर	करण	विष्टि
उ-उदय	जन्म नामाक्षर	सू-सुगन्धा
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मेष
वैश्य	वर्ण	शूद्र
चतुष्पाद	वश्य	मानव
मेष	योनि	अश्व
राक्षस	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
गरूड़	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	मेष	23:24:57
सूर्य	मीन	08:41:43
चंद्र	कुंभ	17:09:44
मंगल	वृश्चि	23:22:02
बुध	कुंभ	13:53:05
गुरु	वृष	12:15:49
शुक्र व	मीन	19:51:47
शनि	वृष	03:02:51
राहु व	मिथु	18:09:42
केतु व	धनु	18:09:42
हर्ष	मक	29:13:12
नेप	मक	14:16:14
प्लूटो व	वृश्चि	21:24:09

विंशोत्तरी
सूर्य 1वर्ष 7मा 16दि
राहु
08/05/2016
08/05/2034

राहु	19/01/2019
गुरु	13/06/2021
शनि	19/04/2024
बुध	07/11/2026
केतु	25/11/2027
शुक्र	25/11/2030
सूर्य	20/10/2031
चन्द्र	20/04/2033
मंगल	08/05/2034

विंशोत्तरी
राहु 3वर्ष 9मा 29दि
शनि
20/01/2021
21/01/2040

शनि	24/01/2024
बुध	03/10/2026
केतु	12/11/2027
शुक्र	11/01/2031
सूर्य	24/12/2031
चन्द्र	25/07/2033
मंगल	03/09/2034
राहु	10/07/2037
गुरु	21/01/2040

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:49:27 चित्रपक्षीय अयनांश 23:52:10

लग्न-चलित

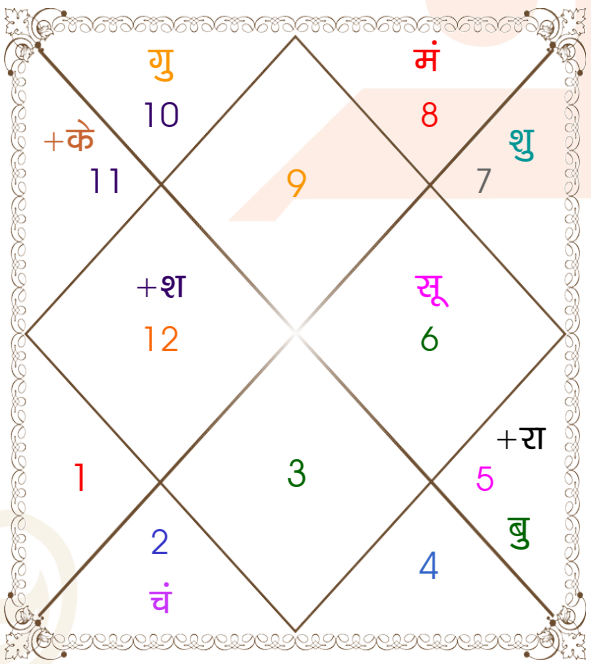

लग्न-चलित

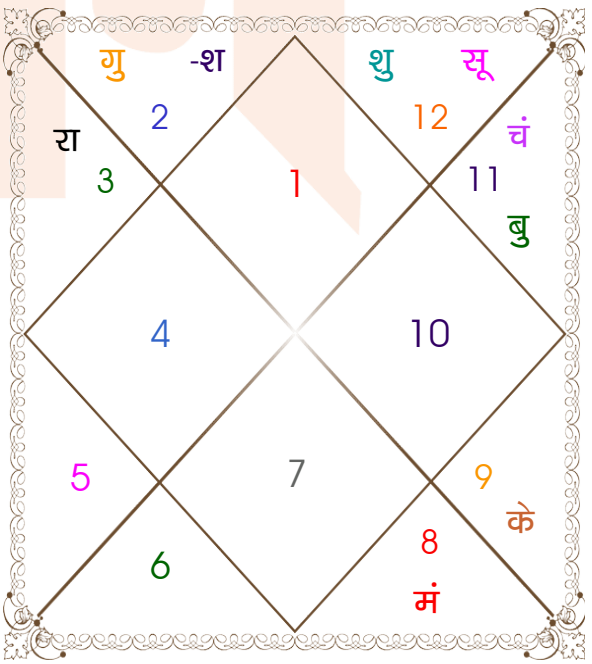

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	अश्व	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	32.50		

कुल : **32.5 / 36**

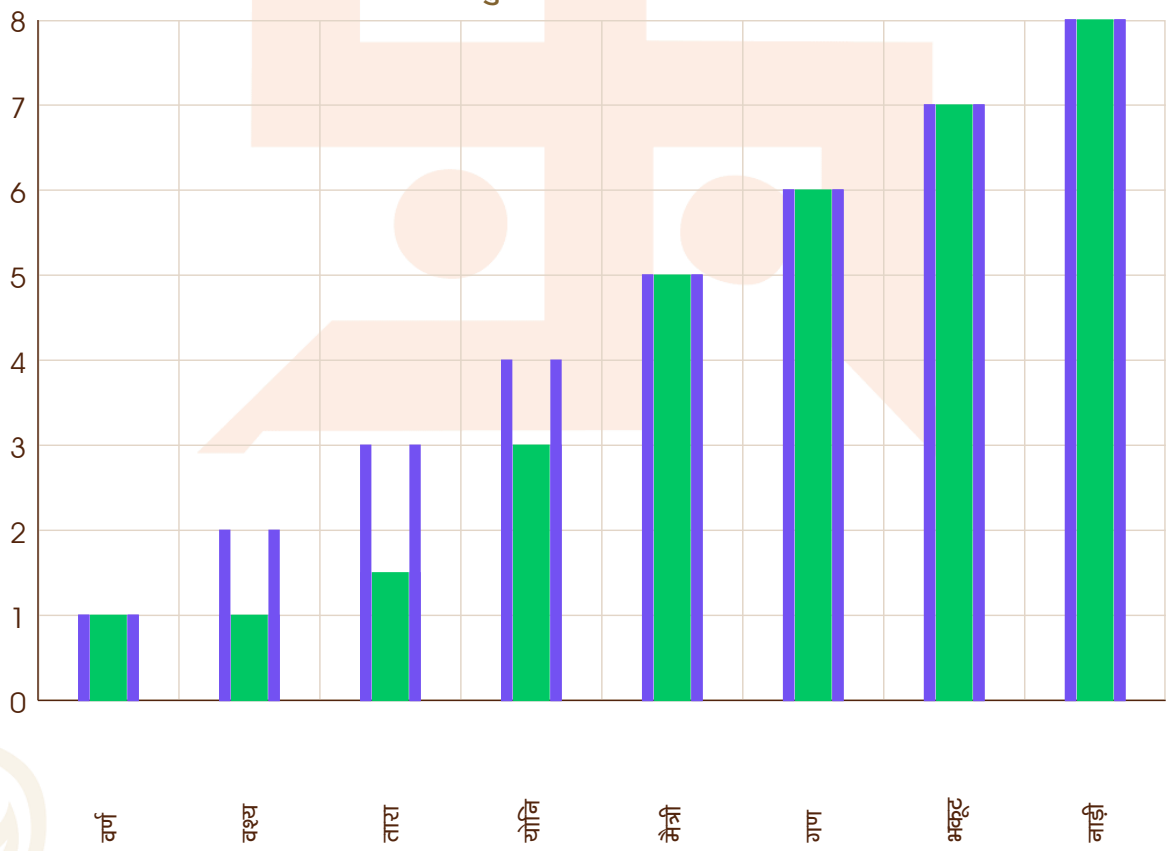

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट मिलान

पदकतंरममज का वर्ग गरूड़ है तथा ैीप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार पदकतंरममज और ैीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

पदकतंरममज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल पदकतंरममज कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ब्;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल पदकतंरममज कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ैीप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ब्;थ्डम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल ैीप कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।

त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ैीप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

पदकतंरममज तथाैीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

Gayatri jyotish karyalaya
Sojat Road, Rajasthan 306103, India
9799364202, 9929276521
rakeshvyas1988@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

पदकतंरममज का वर्ण वैश्य है तथा ेीप का वर्ण शूद्र है। इसमें ेीप का वर्ण पदकतंरममज के वर्ण से नीचा है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप ेीप अति आज्ञाकारी, सहायता करने वाली तथा बिना किसी शिकायत के पूरे परिवार की सेवा-सुश्रुषा एवं देखभाल करने वाली होगी। साथ ही हर किसी की सेवा के लिए ेीप हमेशा तत्पर रहेगी। बिना उचित कारण के वह किसी के साथ तर्क-वितर्क अथवा झगड़ा नहीं करेगी।

वश्य

पदकतंरममज का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं ेीप का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार पदकतंरममज एवं ेीप एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी ेीप क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

पदकतंरममज की तारा वध तथा ेीप की तारा क्षेम है। पदकतंरममज की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। पदकतंरममज बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। पदकतंरममज को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु ेीप लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

पदकतंरममज की योनि मेष है तथा ेीप की योनि अश्व है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा

रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में पदकतंरममज एवं ीप दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि पदकतंरममज एवं ीप के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण पदकतंरममज एवं ीप जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

पदकतंरममज का गण राक्षस है तथा ीप का गण भी राक्षस है। अर्थात ीप का गण पदकतंरममज के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण पदकतंरममज एवं ीप दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

पदकतंरममज सें ीप की राशि दशम भाव में स्थित है तथा ीप से पदकतंरममज की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण पदकतंरममज एक पारिवारिक व्यक्ति होंगे तथा अपनी पत्नी एवं बच्चों समेत परिवार के हर सदस्य की देखभाल करेंगे। उन्हें अपने संबंधियों से ही खुशी प्राप्त होगी तथा उनकी पत्नी सदैव कर्त्तव्यों के निर्वहन में उनकी मदद करती रहेंगी। ीप को घर, वाहन, मां का प्यार समेत जीवन में हर सुख एवं खुशी प्राप्त होगी। ीप हमेशा अपने पति की परछाईं बनकर सदैव उनकी सहायता करती रहेंगी।

नाड़ी

पदकतंरममज की नाड़ी अन्त्य है तथा ीप की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह समन्वय शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ को संतुलित करता है। पदकतंरममज की अन्त्य नाड़ी तथा ीप की आद्य नाड़ी होने के कारण उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सत्ता, शक्ति एवं दम्पत्ति के पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी संतान अति भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं शक्ति संपन्न होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

पदकतंरममज की राशि भूमितत्व युक्त वृष तथा ीप की राशि वायुतत्व युक्त है। भूमितत्व एवं वायुतत्व में यद्यपि असमानताएं अधिक होती है तथापि अपनी बुद्धिमता एवं सामंजस्यशील प्रवृति के कारण ये न्यूनाधिक मात्रा में सुख एवं प्रसन्नता अर्जित करने में समर्थ रहते है।

पदकतंरममज का राशि स्वामी शुक्र तथा ीप का राशि स्वामी शनि परस्पर मित्रता का भाव रखते है। अतः इसके प्रभाव से इनके मध्य परस्पर समानता एवं मित्रता का भाव होगा। जिससे दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता तथा शांति बनी रहेगी एवं एक दूसरे के सुख सहयोग का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा परस्पर भावनाओं का आदर करके उन्हें पूर्ण करने में तत्पर रहेंगे।

पदकतंरममज तथा ीप की राशि परस्पर चतुर्थदशम में पड़ती है। यह शुभ भकूट माना जाता है। अतः इसके प्रभाव से इनके दाम्पत्य जीवन में सुख संसाधनों एवं मधुर संबधों में वृद्धि होगी। पदकतंरममज के भावनात्मक संकेत से ही अंतर्मन में ीप को उनके प्रति आकर्षण के लिए प्रवृत करेंगी। साथ ही दोनों एक दूसरे के गुणों से प्रभावित होंगे तथा सम्मान भी करेंगे। इस प्रकार पदकतंरममज और ीप का जीवन सुख एवं समृद्धि से युक्त व्यतीत होगा।

पदकतंरममज का वश्य चतुष्पद तथा ीप का वश्य मानव है। चतुष्पद तथा मानव की परस्पर असमानता एवं नैसर्गिक शत्रुता होती है। अतः पदकतंरममज और ीप की अभिरूचियों में अन्तर रहेगा। शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी विभिन्नता रहेगी फलतः तथा इनमे एक दूसरे को प्रसन्न तथा सनतुषट रखने मे असमर्थ होंगे जिससे संबंधों की मधुरता मे न्यूनता आएगी।

पदकतंरममज का वर्ण वैश्य तथा ीप का वर्ण शूद्र है। पदकतंरममज की प्रवृति धनार्जन के प्रति अधिक रहेगी तथा वाणिज्य बुद्धि से कार्यों में प्रवृत रहेगे लेकिन ीप की प्रवृति किसी भी कार्य को ईमानदारी से सम्पन्न करने में रहेगी। अतः पदकतंरममज की बुद्धि एवं ीप के परिश्रम से कार्य क्षेत्र मे उन्नति के कारण आर्थिक रूप से ये सुदृढ़ रहेंगे।

धन

पदकतंरममज और ीप की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन पदकतंरममज पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते है। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त पदकतंरममज की प्रवृति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी

होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की इस प्रवृति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

पदकतंरममज अन्त्य तथा ॅीप आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः विभिन्न नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे जिससे गंभीर शारीरिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी परन्तु मंगल का पदकतंरममज और ॅीप दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से ॅीप गुप्त या धातु संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही पदकतंरममज को हृदय रोग संबंधी परेशानियां होगी एवं संभोग शक्ति में शिथिलता की अनुभूति करेंगे जिससे दाम्पत्य सुख में न्यूनता की अनुभूति होगी। अतः इन दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए पदकतंरममज और ॅीप दोनों को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से पदकतंरममज और ॅीप को उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगा तथा कन्या संतति की अपेक्षा पुत्र संतति अधिक रहेगी।

प्रसव संबंधी कष्ट के लिए आप को किसी भी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। इनका प्रसव सामान्य रूप से सम्पन्न होगा तथा इससे संबधित कोई भी समस्या नहीं होगी। ॅीप सुदंर एवं स्वस्थ बच्चों को जन्म देंगी तथा स्वयं भी पूर्ण रूपेण स्वस्थता की अनुभूति करेंगी। इससे पदकतंरममज और उसके परिवार के सभी सदस्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

पदकतंरममज और ॅीप की संततियां व्यवहारकुशल एवं माता पिता के लिए आज्ञाकारी रहेंगी तथा अपने बच्चों की प्रगति से दोनों सन्तुष्टि एवं आनंद की अनुभूति करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी वे स्वपरिश्रम योग्यता एवं बुद्धिमत्ता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। उनके उत्कृष्ट कार्य कलापों से पदकतंरममज और ॅीप अपने आप को भाग्यशाली समझेंगे। इनकी संततियां कभी भी उनकी इच्छा के विपरीत कोई भी कार्य नहीं करेंगी जिससे माता पिता को उन पर गर्व रहेगा। इस प्रकार सुदंर, आज्ञाकारी एवं बुद्धिमान संतति से युक्त होकर पदकतंरममज और ॅीप का पारिवारिक जीवन सुख शांति एवं आनंद से व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ॅीप के अपनी सास से संबधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ से ॅीप किसी भी अनावश्यक समस्या या असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। ॅीप के हृदय में उनके प्रति सेवा भाव रहेगा तथा अपनी सेवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्यपि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा सामान्यतया संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके ससुर से ीप को विशेष स्नेह सम्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी तथा के द्वारा ीप को समय समय पर समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों से ीप के अत्यंत ही स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण संबध रहेंगे तथा उनसे इन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी समस्याओं तथा सुख दुख में एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इस प्रकार ीप के सास ससुर का दृष्टिकोण सामान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

ससुराल-श्री

पदकतंरममज के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा पदकतंरममज अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी पदकतंरममज का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में पदकतंरममज का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि पदकतंरममज तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में पदकतंरममज के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।